14. Not only did he die, but on the third day he rose from the grave, vindicating his claim to be the true Messiah - the Door through which we can receive forgiveness and peace with God, as a free gift!

न केवल उनकी मृत्यु हुई, बल्कि तीसरे दिन वह कब्र से उठे, उनके सच्चे मसीहा होने के दावे की पुष्टि करते हुए - दरवाजा जिसके माध्यम से हम भगवान के साथ माफी और शांति प्राप्त कर सकते हैं, एक मुफ्त उपहार के रूप में!

15. This means that those who have turned away from rebellion against God, and who are truly grieved by their errors (sins). Who place their faith only in Jesus Christ, become justified and are given a new nature (spiritual rebirth).
See: Romans 5: 1-2 & 1 Peter 1:23

इसका अर्थ है कि जो लोग परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह से दूर हो गए हैं, और जो वास्तव में अपनी गलतियों (पापों) से दुखी हैं। जो केवल यीशु मसीह में अपना विश्वास रखते हैं, धर्मी बन जाते हैं और उन्हें एक नया स्वभाव (आध्यात्मिक पुनर्जन्म) दिया जाता है।
देखें: रोमियों 5: 1-2 और 1 पतरस 1:23

16. Jesus said:
"Verily, verily, I say unto you, He that hears My word, and believes on Him that sent me, has everlasting life, and shall not come into condemnation; but is passed from death unto life".
John 5:24 See also: Romans 5:9, 8:1 Matthew 11:28-30

मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
देखें: जॉन 5:24 रोमियों 5: 9, 8: 1 मत्ती 11: 28-30

17. When people asked "what shall we do?"
The apostle Peter said to them, "Repent, and be baptized every one of you in the name of Jesus Christ for the remission of sins, and you shall receive the gift of the Holy Ghost. For the promise is unto you, and to your children, and to all that are afar off, even as many as the Lord our God shall call. And with many other words did he testify and exhort, saying, Save yourselves from this untoward [crooked/perverse] generation."
Acts 2:37-40

जब लोगों ने पूछा "हम क्या करेंगे?"
पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उस ने बहुत ओर बातों में भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी पीढ़ी से बचाओ। प्रेरितों 2: 37-40

18. Read the Holy Bible for yourself
Start by reading the Gospel of John and Romans in the Holy Bible.

Be sure to study and follow only a faithful translation of the Holy Bible that follows the Historic Traditional Text in the same way that the King James Version does in English.

अपने लिए पवित्र बाइबिल पढ़ें

पवित्र बाइबल में जॉन और रोमियों के सुसमाचार को पढ़कर प्रारंभ करें।

पवित्र बाइबिल के केवल एक वफादार अनुवाद का अध्ययन और पालन करना सुनिश्चित करें जो ऐतिहासिक पारंपरिक पाठ का उसी तरह अनुसरण करता है जैसे कि किंग जेम्स संस्करण अंग्रेजी में करता है।

FREE to share:
See complete phone .pdf versions of TheKey 4u
in more languages with Gospels or Bible Downloads at the following archive link:

साझा करने के लिए मुफ़्त:
TheKey 4u . के संपूर्ण फ़ोन .pdf संस्करण देखें निम्नलिखित संग्रह लिंक पर सुसमाचार या बाइबिल डाउनलोड के साथ अधिक भाषाओं में:

https://archive.org/details/@mav64

Free Bible download here
मुफ्त बाइबिल यहाँ डाउनलोड करें:

https://www.wordproject.org/bibles/in/index.htm

For helpful and encouraging messages in English:
अंग्रेजी में उपयोगी और उत्साहजनक संदेशों के लिए:
www.mljtrust.org

If you find any errors and would like to offer any suggested corrections
यदि आपको कोई त्रुटि मिलती है और आप किसी भी सुझाए गए सुधार की पेशकश करना चाहते हैं, तो कृपया उन्हें इस पर अग्रेषित करें: thekeyinfo@protonmail.com धन्यवाद।

English / Hindi

The Key4u

चाबी

The following message is currently being translated from English. So there will likely be errors in this translation. If you find any errors and would like to offer any suggested corrections, please forward them to the email address at the end of this message. Thank you.

निम्न संदेश का वर्तमान में अंग्रेजी से अनुवाद किया जा रहा है। अतः इस अनुवाद में त्रुटियाँ होने की संभावना है। यदि आपको कोई त्रुटि मिलती है और आप किसी भी सुधार का सुझाव देना चाहते हैं, तो कृपया उन्हें इस संदेश के अंत में ईमेल पते पर अग्रेषित करें। धन्यवाद।

1. Notice:
The following message is given to you strictly for your thoughtful consideration. It is not intended to promote of any Religious organisation, business or personal enterprise. So please read carefully – this message is free to share.

सूचना: यह संदेश आपको आपके विचारपूर्ण विचार के लिए कड़ाई से दिया जाता है। यह किसी भी धार्मिक संगठन, व्यवसाय या व्यक्तिगत उद्यम के प्रचार के लिए नहीं है।

2. When Jesus Christ walked this earth, his whole life was an example of love, honesty and compassion. When people were hungry he fed them, when they were sick he healed them. And he did not condemn those who repented of breaking God's law, but freely forgave them.

जब यीशु मसीह इस धरती पर चले, तो उनका पूरा जीवन प्रेम, ईमानदारी और करुणा का उदाहरण था। जब लोग भूखे थे तो उसने उन्हें खिलाया, जब वे बीमार थे तो उन्होंने उन्हें चंगा किया।
और उसने उन लोगों की निंदा नहीं की जिन्होंने परमेश्वर के कानून को तोड़ने का पश्चाताप किया, लेकिन उन्हें स्वतंत्र रूप से क्षमा कर दिया।

3 The Sacred Scriptures reveal that Jesus Christ came to demonstrate the Love our Creator would want for us. This showed that God does care for us, and desires that we draw near to him. See: John 3:16 & 4:23

पवित्र ग्रंथों से पता चलता है कि यीशु मसीह हमारे निर्माता के लिए जो प्यार चाहते हैं उसे प्रदर्शित करने के लिए आए थे। इससे पता चला कि परमेश्वर हमारी देखभाल करता है, और इच्छाएँ कि हम उसके निकट आते हैं। देखें: जॉन 3:16 और 4:23

4. But He is not someone to surrender to what ever we demand. Instead what He alone knows what we would need. And only on his terms. So Jesus Christ came to be the exact Way by which we could enter this new relationship based on the Grace of God, rather than through the works of the Law.

लेकिन वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो हम जो कुछ भी मांगते हैं उसे आत्मसमर्पण कर दें। इसके बजाय वह अकेला जानता है कि हमें क्या चाहिए। और केवल उसकी शर्तों पर।इसलिए यीशु मसीह वह सटीक तरीका बन गया जिसके द्वारा हम व्यवस्था के कार्यों के बजाय परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित इस नए संबंध में प्रवेश कर सकते थे।

5. ईश्वरीय विधान - इसका उद्देश्य

Divine Law - Its Purpose

मैं पूछ सकता हूं "अच्छा, दस आज्ञाएँ क्यों?"

I might ask "Well, why the Ten Commandments?"
The reason for the Law was to establish the boundries of truth and error. And naturally, The Creator being perfect can only give perfect laws. The Problem with this is that Divine Law is perfect but I am not. I may have good intentions but my nature is flawed. So as far as the Law is concerned I would always be found guilty

कानून का कारण सत्य और त्रुटि की सीमाओं को स्थापित करना था।और स्वाभाविक रूप से, सृजनहार पूर्ण होने के कारण केवल सिद्ध नियम ही दे सकता है।इसके साथ समस्या यह है कि ईश्वरीय कानून परिपूर्ण है लेकिन मैं नहीं हूं। मेरे अच्छे इरादे हो सकते हैं लेकिन मेरा स्वभाव त्रुटिपूर्ण है।जहां तक कानून का सवाल है मैं हमेशा दोषी पाया जाता।
देखें: रोमि 3:23

6. Although Divine Law is good, it actually shows how grossly sinful my misdeeds are! So what was it's purpose? It was to help me recognise that unless God intervened on my behalf, it would be a hopeless situation. I would need The Messiah (The Saviour), and a new nature. So that Grace would rule over my life and not sin.

See: Romans 5:20-21

यद्यपि ईश्वरीय व्यवस्था अच्छी है, यह वास्तव में दिखाती है कि मेरे पाप कितने पापी हैं! तो इसका उद्देश्य क्या था? यह मुझे यह पहचानने में मदद करने के लिए था कि जब तक भगवान ने मेरी ओर से हस्तक्षेप नहीं किया, यह एक निराशाजनक स्थिति होगी। मेरे पास मसीहा (उद्धारकर्ता) और एक नया स्वभाव होना चाहिए।
ताकि अनुग्रह मेरे जीवन पर राज्य करे, पाप नहीं।
देखें: रोमियों 5:20-21

7. As young children, the rules our parents or guardians laid down sometimes seemed far too strict and didn't make any sense, it was only when we were order that we began to understand reasons for them and to see their value. This may not have been your own experience but bear with me for the moment,

छोटे बच्चों के रूप में, हमारे माता-पिता या अभिभावक जो नियम निर्धारित करते हैं, वे कभी-कभी बहुत सख्त लगते हैं और उनका कोई मतलब नहीं होता है, जब हम बड़े होते थे तब ही हम उनके कारणों को समझते थे और उनकी कीमत को देखना शुरू कर देते थे। यह आपका अपना अनुभव नहीं हो सकता है लेकिन मेरे साथ इस पल का इंतजार करें।

8. The point is, not only their laws (rules) but our welfare is being thought of. An example of this is when Jesus said to the false teachers, " The Sabbath was made for man, and not man for the sabbath day".

See: Mark 2:27-28 Note: Sabbath means "rest"

मुद्दा यह है कि न केवल उनके कानून (नियम) बल्कि हमारे कल्याण के बारे में भी सोचा जा रहा है। इसका एक उदाहरण है जब यीशु ने झूठे शिक्षकों से कहा, "सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए"।

देखें: मरकुस 2:27-28 नोट: सब्त का अर्थ है "आराम"।

9. What kind of relationship would you have if it was based merely on conforming to regulations? Would that encourage a real love? So the creator provided freedom for us to choose, so that we could participate (be involved) in the relationship. This freedom however, can be abused and is the reason for the horror through out history.

यदि यह नियमों के अनुरूप होने पर ही आधारित हो तो आपका कैसा संबंध होगा? क्या इससे वास्तविक प्रेम को बढ़ावा मिलेगा?
इसलिए सृजनहार ने हमें चुनने की स्वतंत्रता प्रदान की, ताकि हम रिश्ते में भाग ले सकें। हालाँकि, इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया जा सकता है और यह इतिहास से बाहर के आतंक का कारण है।

10 And so, mankind's corrupt nature and self-serving motives result in evil, deception,* exploitation and wars.
* Matthew 7:15, 24:4-5,9-12 1John 5:20-21

The Holy Scriptures speak of those who are in direct opposition to their Creator: "But he that sins against me wrongs his own soul: all they that hate me love death". Proverbs 8:36

और इसलिए, मानव जाति के भ्रष्ट स्वभाव और आत्म-सेवा के उद्देश्यों के परिणामस्वरूप बुराई, धोखे, * शोषण और युद्ध होते हैं।
* मत्ती 7:15, 24: 4-5,9-12 1 यूहन्ना 5: 20-21

पवित्र शास्त्र उन लोगों की बात करता है जो अपने सृजनहार के सीधे विरोध में हैं: परन्तु जो मेरा अपराध करता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है; जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं॥ नीतिवचन 8:36

11. On the other hand a relationship guided by true love (The Royal Law*) exhibits true reverence for God and therefore care of all of His creation. It encourages growth, maturity and strength of character. It does not exploit you.
See: *James 2:8 & Matthew 22:37-40

दूसरी ओर सच्चे प्रेम (द रॉयल लॉ*) द्वारा निर्देशित एक रिश्ता ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति प्रदर्शित करता है और इसलिए उसकी सारी सृष्टि की परवाह करता है। यह विकास, परिपक्वता और चरित्र की ताकत को प्रोत्साहित करता है। यह आपका शोषण नहीं करता है।
देखें: *याकूब 2:8 और मत्ती 22:37-40

12. The source is Divine and therefore cultivates these things: Honesty compassion, responsibility and forgiveness. This was the reason why Christ was so merciful and forgiving. He was the physical demonstration of God's love. And he was prepared to pay the ultimate price. John 3:16

स्रोत दिव्य है और इसलिए इन चीजों की खेती करता है: ईमानदारी, दया, जिम्मेदारी और क्षमा। यही कारण है कि मसीह इतना दयालु और क्षमाशील था। क्योंकि वह परमेश्वर के प्रेम का भौतिक प्रदर्शन था। और वह अंतिम कीमत चुकाने के लिए तैयार था। जॉन 3:16

13. So as predicted by the prophets, Christ gave Himself as the final sacrifice to meet the requirements (ie pay the penalty) of the law. On behalf of everyone who would believe. See: Isaiah 53

जैसा कि भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की गई थी, मसीह ने खुद को कानून की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंतिम बलिदान के रूप में दिया (यानी दंड का भुगतान करें)। सभी की ओर से जो विश्वास करेगा। देखें: यशायाह ५३